ख़ुदा तआला के मौजूद होने के दस प्रमाण

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब
ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि अल्लाह अन्हु

ख़ुदा तआला के मौजूद होने के दस प्रमाण

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि॰

नाम पुस्तक : ख़ुदा तआला के मौजूद होने के दस प्रमाण
Name of book : Khuda Taa'la ke Moujood Hone ke Das Pramaan
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि॰]
Writer : Hazrat Mirza Bashiruddin Mahmood Ahmad Khalifatul Masih II (Razi)
अनुवादक : अली हसन एम.ए. एच.ए.
Translator : Ali Hasan M.A. H.A.
सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi silsila
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) मई 2018 ई०
Edition : 1st Edition (Hindi) May 2018
संख्या, Quantity: 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू-व-नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

أَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

(क्या तुम अल्लाह के बारे में शक करते हो जिसने धरती और आसमान को पैदा किया है।)

ख़ुदा तआला (स्त्रष्टा) के मौजूद होने के प्रमाण

इस युग में आस्था और विश्वास पर भौतिकवादियों ने जो ऐतराज़ किए हैं उनमें सबसे बड़ा विषय ख़ुदा का इन्कार है। मूर्तिपूजक यद्यपि मूर्तियों को ख़ुदा या उसका साझीदार ठहराता है, पर कम से कम वह ख़ुदा के अस्तित्व को तो स्वीकारता है लेकिन नास्तिक तो इसका पूर्णतः ही इन्कार करता है। आधुनिक विज्ञान ने प्रत्येक चीज़ का आधार अवलोकन को ठहराया है। इसलिए नास्तिक प्रश्न करते हैं कि अगर ख़ुदा है तो हमें दिखाओ, हम बिना देखे उसे कैसे मान लें। चूँकि इस युग की विचारधारा ने अधिकतर नवजवानों के दिलों से उस पवित्र हस्ती के नक़्श (कल्पना) को मिटा दिया है और कालेजों के सैकड़ों विद्यार्थी और बैरिस्टर (विधिवक्ता) इत्यादि, ख़ुदा तआला के अस्तित्व का इन्कार कर रहे हैं और उनकी संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है। हज़ारों आदमी ऐसे पाए जाते हैं जो खुले तौर पर क़ौम और देश के डर से कहते तो नहीं, पर वस्तुतः वे अपने दिलों में ख़ुदा पर विश्वास नहीं रखते। इसलिए मैंने चाहा कि इस पर एक छोटी सी पुस्तिका लिखकर प्रकाशित करूँ। शायद किसी सौभाग्यशाली को लाभ पहुँच जाए।

1. नास्तिकों का पहला प्रश्न यह है कि अगर हमें ख़ुदा दिखा दो तो हम मान लेते हैं।

मुझे इस प्रश्न के सुनने का कई बार मौक़ा मिला है लेकिन इसके सुनने से हमेशा आश्चर्य होता है। मनुष्य विभिन्न चीज़ों को विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों से पहचानता है। किसी को देख कर, किसी को छू कर, किसी को सूँघ कर, किसी को सुन कर, किसी को चख कर। रंग का ज्ञान देखने से हो सकता है, सूँघने या छूने या चखने से नहीं। अगर कोई कहे कि मैं तो रंग को तब मानूँगा जब मुझे उसकी आवाज़ सुनवाओ, तो बताओ क्या वह व्यक्ति मूर्ख है या नहीं। इसी तरह आवाज़ का ज्ञान सुनने से होता है, लेकिन अगर कोई व्यक्ति यह कहे कि मुझे अमुक व्यक्ति की आवाज़ दिखाओ तब मैं देखकर मानूँगा कि वह बोलता है, तो बताओ कि क्या ऐसा व्यक्ति मूर्ख होगा कि नहीं। इसी तरह ख़ुशबू सूँघकर मालूम होती है लेकिन अगर कोई व्यक्ति यह कहे कि अगर तुम मुझे गुलाब की ख़ुशबू चखा दो तो तब मैं मानूँगा, तो क्या ऐसे आदमी को बुद्धिमान कह सकते हैं। इसी तरह चखकर ज्ञात करने वाली चीज़ें अर्थात् खटाई, मिठाई, नमक और कड़वाहट इत्यादि को यदि कोई सूँघकर मालूम करना चाहे, तो कभी नहीं कर सकता। अतः यह आवश्यक नहीं कि जो चीज़ सामने नज़र आए उसे तो हम मान लें और जो चीज़ सामने नज़र न आए उसे न मानें। इस तरह तो गुलाब की ख़ुशबू, नीबू की खटास, शहद की मिठास, एलवा की कड़वाहट, लोहे की सख़्ती, आवाज़ की ख़ूबी इत्यादि सब का इन्कार करना पड़ेगा क्योंकि यह चीज़ें तो दिखाई नहीं देतीं। बल्कि सूँघने, चखने, छूने और सुनने से ज्ञात होती हैं। अतः यह ऐतराज़ कितना ग़लत है कि ख़ुदा को हमें दिखाओ तब हम मानेंगे। क्या ये ऐतराज़ करने वाले ग़ुलाब की ख़ुशबू या शहद की मिठास को देखकर मानते हैं। फिर क्या कारण है कि अल्लाह तआला के अस्तित्व के बारे में यह शर्त प्रस्तुत की जाती है कि दिखा दो तब मानेंगे।

इसके अतिरिक्त मनुष्य के अस्तित्व में स्वयं ऐसी चीज़ें मौजूद हैं कि जिनको बिना देखे वह मानता है और उसे मानना पड़ता है। क्या सब लोग अपने दिल, जिगर, दिमाग़, आँतें, फेफड़े और तिल्ली को देखकर मानते हैं या बिना देखे? अगर इन चीज़ों को उसे दिखाने के लिए निकाला जाए तो मनुष्य उसी समय मर जाए और देखने की नौबत ही न आए।

यह उदाहरण तो मैंने इस बात के लिए दिए हैं कि सब चीज़ें सिर्फ़ देखने से ही मालूम नहीं होतीं, बल्कि पाँच भिन्न-भिन्न ज्ञानेन्द्रियों से उनका पता चलता है। अब मैं बताता हूँ कि बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं कि जिनका पता इन पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से भी नहीं चलता, बल्कि उनके मालूम करने का साधन ही कुछ और है। उदाहरण के तौर पर बुद्धि या स्मरणशक्ति या टैलेन्ट (प्रतिभा) ऐसी चीज़ें हैं कि जिनका दुनिया में कोई भी इन्कार नहीं करता, लेकिन क्या किसी ने बुद्धि को देखा है या सुना है या चखा या सूँघा या स्पर्श किया है? फिर कैसे मालूम हुआ कि बुद्धि या स्मरणशक्ति भी कोई चीज़ है। शक्ति ही को ले लो, हर इन्सान में थोड़ी-बहुत ताक़त मौजूद है। कोई कमज़ोर हो या ताक़तवर कुछ न कुछ ताक़त उसके अन्दर ज़रूर पायी जाती है, लेकिन क्या ताक़त को आज तक किसी ने देखा है या सुना या छुआ या चखा है? फिर कैसे मालूम हुआ कि ताक़त भी कोई चीज़ है। इस बात को एक मूर्ख से मूर्ख इन्सान भी समझ सकता है कि इन चीज़ों को हमने अपनी ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञात नहीं किया, बल्कि उनके प्रभावों को ज्ञात करके उनका पता लगाया है उदाहरणतः जब हमने देखा कि मनुष्य विभिन्न मुश्किलों में घिरने पर कुछ देर ग़ौर करता है और कोई ऐसी युक्ति निकालता है जिससे वह अपनी मुश्किलों से बच जाता है। जब इस तरह मुश्किलों को हल होते हुए हमने देखा तो विश्वास कर लिया कि इन्सान में कोई ऐसी चीज़ मौजूद है

जो इन अवसरों पर उसके काम आती है और उस चीज़ का नाम हमने बुद्धि रखा। अतः बुद्धि को हमने पाँचों ज्ञानेन्द्रियों में से किसी के माध्यम से भी ज्ञात नहीं किया बल्कि उसके करिश्मों को देखकर उसका ज्ञान प्राप्त किया। इसी तरह जब हमने इन्सान को बड़े-बड़े बोझ उठाते देखा तो ज्ञात हुआ कि उसमें कुछ ऐसा तत्व है जिसके कारण यह बोझ उठा सकता है, अपने से कमज़ोर चीज़ों को क़ाबू कर लेता है। फिर उसका नाम शक्ति या ताक़त रख दिया।

इसी तरह जितनी सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज़ों को लेते जाओगे उनके अस्तित्व लोगों की नज़रों से ओझल ही दिखाई देंगे और उनके वजूद का पता हमेशा उनके असर से मालूम होगा, न कि उन्हें देखकर या सूँघकर और न ही चखकर या छू कर।

अतः अल्लाह तआला की हस्ती जो अत्यन्त सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर है उसका पता करने के लिए ऐसी शर्तें लगाना किस तरह उचित हो सकता है कि आँखों से देखे बिना उसे नहीं मानेंगे। क्या विद्युत को किसी ने देखा है? फिर क्या बिजली की सहायता से जो टेलीग्राम पहुँचते हैं या कल-कारखाने चलते हैं या रोशनी की जाती है इसका इन्कार किया जा सकता है? ईथर की खोज ने भौतिक ज्ञान के क्षेत्र में तहलका मचा दिया है। लेकिन क्या अब तक वैज्ञानिक इसके देखने, सुनने, सूँघने, छूने या चखने का कोई तरीक़ा निकाल सके। लेकिन इसका अस्तित्व न मानें तो फिर यह बात हल ही नहीं हो सकती कि सूरज का प्रकाश धरती तक कैसे पहुँचता है। अतः यह कैसी मूर्खता है कि इन प्रमाणों के होते हुए भी कहा जाता है कि ख़ुदा को दिखाओ तो हम मानेंगे। अल्लाह तआला दिखाई तो देता है, लेकिन उन्हीं आँखों से जो उसके देखने के योग्य हों। हाँ अगर कोई उसके देखने का इच्छुक हो तो वह अपनी शक्तियों और

चमत्कारों के द्वारा दुनिया के सामने है और ओझल होने के बावजूद सबसे अधिक सुस्पष्ट और परिभाषित है। क़ुर्आन शरीफ़ में इस विषय को अत्यन्त संक्षिप्त और अद्‌भुत अन्दाज़ में अल्लाह तआला ने इस तरह बयान फ़रमाया है कि:-

لَاتُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ○

(अल्-अनाम् - 104)

अर्थात् अल्लाह तआला का अस्तित्व ऐसा है कि आँखें उस तक नहीं पहुँच सकतीं, बल्कि वह स्वयं आँखों तक पहुँचता है और वह अति सूक्ष्मदर्शी और हर चीज़ को जानने वाला है।

इसमें अल्लाह तआला ने मनुष्य का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है कि तेरी दृष्टि इस योग्य नहीं कि ख़ुदा के अस्तित्व को देख सके, क्योंकि वह तो अत्यन्त सूक्ष्म हस्ती है और सूक्ष्म चीज़ें तो दिखाई नहीं देतीं जैसे कि बल, बुद्धि, विद्युत, ईथर और आत्मा इत्यादि। इनको कोई देख नहीं सकता। फिर ख़ुदा की अत्यन्त सूक्ष्म हस्ती तक मनुष्य की आँखें कैसे पहुँच सकती हैं? फिर प्रश्न यह उठता है कि ख़ुदा को लोग किस तरह देख सकते हैं? और उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने का ढंग क्या है? इसका उत्तर यह दिया कि وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ अर्थात् वह स्वयं आँखों तक पहुँचता है। मनुष्य की दृष्टि कमज़ोर होने के कारण उसकी जड़ तक नहीं पहुँच सकती, लेकिन इसके बावजूद वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य के चमत्कार और व्यापक विशेषताओं को प्रकट करके अपना अस्तित्व स्वयं लोगों पर प्रकट करता है। मनुष्य की आँख उसे देख नहीं सकती बल्कि वह स्वयं अपना अस्तित्व अपनी अनन्त शक्तियों और चमत्कारों से कभी प्रकोपीय निशानों के द्वारा, कभी अवतारों के द्वारा, कभी कृपा और दया करके और कभी दुआओं को स्वीकार करके विभिन्न प्रकारों

से प्रकट करता रहता है।

अब इस बात को साबित कर चुकने के बाद अगर अल्लाह तआला को मानना इस बात पर आधारित किया जाए कि हम उसे दिखा दें और देखे बिना किसी चीज़ को माना ही न जाए तो संसार की लगभग 80 प्रतिशत चीज़ों का इन्कार करना पड़ेगा और कई फिलास्फरों के अनुसार तो सारी चीज़ों का। क्योंकि उनका मत है कि संसार में कोई चीज़ मूल रूप से दिखाई नहीं देती बल्कि केवल विशेषताएँ ही विशेषताएँ नज़र आती हैं। अब मैं यह बताना चाहता हूँ कि वे कौन से प्रमाण हैं जिनसे ख़ुदा (स्त्रष्टा) के विद्यमान होने का पता चलता है और मनुष्य को यक़ीन होता है कि मेरा स्त्रष्टा कोई और है, मैं अपने अस्तित्व का स्त्रष्टा नहीं।

पहला प्रमाण -

मैं अपनी इस धारणा के अनुसार कि क़ुर्आन शरीफ़ ने आध्यात्मिक पराकाष्ठा तक पहुँचने के सारे साधन बयान किए हैं। मैं ख़ुदा तआला के विद्यमान होने के सारे प्रमाण ख़ुदा के फ़ज़्ल से क़ुर्आन शरीफ़ से ही प्रस्तुत करूँगा। चूँकि सबसे पहला ज्ञान जो मनुष्य को इस संसार में आने के बाद होता है वह कानों से होता है। इसलिए मैं भी सबसे पहले सुनने के एहसास (अनुभूति) सम्बन्धी प्रमाण को लेता हूँ। अल्लाह तआला क़ुर्आन शरीफ़ में एक जगह फ़रमाता है:-

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝
بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝
اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ۝

(अल्-आला - 15 से 20)

अर्थात्- जिसने अपने मन को शुद्ध किया और अपने प्रतिपालक

का मुँह से इक़रार किया और फिर मुँह से इक़रार ही नहीं बल्कि व्यवहारिक रूप से इबादत करके अपने इक़रार का प्रमाण दिया वह सफल और प्रशंसनीय हो गया। लेकिन तुम लोग तो दुनियादारी की ज़िन्दगी को अपनाते हो, हालाँकि अन्त भला तो सब भला ही बेहतर और देरपा ज़िन्दगी है और यह बात केवल क़ुर्आन शरीफ़ ही नहीं पेश करता, बल्कि पहले सब आसमानी धर्मग्रन्थों में यह दावा मौजूद है। अतः इब्राहीम और मूसा ने जो शिक्षा लोगों के सामने पेश की, उसमें भी यह शिक्षा मौजूद है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन के मुख़ालिफों के सामने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि अपनी भोग-विलासिताओं से बचने वाले और ख़ुदा की हस्ती का इक़रार करने वाले और फिर उसका सच्चा फ़रमाबर्दार बनने वाले हमेशा सफल और प्रशंसनीय होते हैं। इसके अतिरिक्त इस शिक्षा के सच्चे होने का प्रमाण यह है कि यह बात पहले धर्मों में भी पायी जाती है। अतः क़ुर्आन उस समय के बड़े-बड़े मज़हब ईसाई, यहूदी और कुफ़्फ़ार-ए-मक्का पर अकाट्य और तार्किक प्रमाण प्रस्तुत करते हुए हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा का उदाहरण देता है कि उनको तो तुम मानते हो, उन्होंने भी तो यही शिक्षा दी है। क़ुर्आन शरीफ़ ने ख़ुदा(स्रष्टा) के विद्यमान होने का एक बड़ा प्रमाण यह भी दिया है कि सारे धर्म इस पर एकमत हैं और सारी क़ौमों का यह एक सांझा विषय है। अतः इस प्रमाण पर जितना ग़ौर किया जाय उतना ही स्पष्ट और सच्चा मालूम होता है। दुनिया के सारे धर्म मूलतः इस बात पर एकमत हैं कि कोई हस्ती है जिसने सारे ब्रह्मांड़ की रचना की। भिन्न-भिन्न देशों और परिस्थितियों के बदलाव के कारण विचारों और आस्थाओं में भी अन्तर पड़ता है। लेकिन इसके बावजूद जितने ऐतिहासिक धर्म हैं सब

अल्लाह तआला के अस्तित्व पर एकमत हैं चाहे उसकी विशेषताओं के बारे में उनमें कितने ही मतभेद हों। वर्तमान में पाये जाने वाले सारे धर्म अर्थात् इस्लाम, ईसाइयत, यहूदियत, बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म, हिन्दू धर्म और पारसी इत्यादि सब के सब एक ख़ुदा ईलोहीम, परमेश्वर, परमात्मा, सतगुरू, या यज़दान के क़ायल हैं। इनके अतिरिक्त जो धर्म दुनिया से मिट चुके हैं उनके बारे में भी पुरातत्व से यह पता चलता है कि सब के सब एक ख़ुदा को मानने वाले और उस पर आस्था रखने वाले थे चाहे वे धर्म अमेरिका से दूर किसी देश में पैदा हुए हों या अफ्रीका के जंगलों में या रोम में या ब्रिटेन में या जावा या सुमात्रा में या जापान और चीन में या साइबेरिया या मंचूरिया में। धर्मों में यह सहमति कैसे हो गई और कौन था जिसने अमेरिका के निवासियों को हिन्दुस्तानियों के अक़ीदों से या चीन के निवासियों को अफ्रीकियों के अक़ीदों से अवगत किया। पहले ज़माने में रेल, तार और डाक इत्यादि का यह प्रबन्ध तो था ही नहीं जो अब है। न इस तरह अधिकता से जहाज़ आया –जाया करते थे। घोड़ों और ख़च्चरों की सवारी थी और हवा के सहारे चलने वाली नावें आजकल के दिनों की यात्रा महीनों में किया करती थीं और बहुत से देशों का तो उस समय पता भी नहीं चला था फिर उन भिन्न-भिन्न स्वभाव, चाल-चलन और एक-दूसरे से अनभिज्ञ देशों में इस एक अक़ीदे पर कैसे संयोग हो गया। मनगढ़त ढकोसलों में तो दो आदमियों का सहमत होना मुश्किल होता है। फिर इतनी क़ौमों और देशों का संयोग होना जो परस्पर विचारों के आदान-प्रदान का कोई साधन न रखती थीं क्या इस बात का प्रमाण नहीं कि यह अक़ीदा एक सच्ची बात है और किसी अज्ञात माध्यम से जिसे इस्लाम ने स्पष्ट कर दिया और हर क़ौम और हर देश में इसका बयान किया गया। इतिहासकारों का इस बात पर संयोग है कि जिस विषय

पर विभिन्न क़ौमों के इतिहासकार सहमत हो जाएँ उसकी सच्चाई में शक नहीं करते। अत: जब इस विषय पर लाखों क़ौमों का संयोग है तो क्यों न विश्वास किया जाय कि किसी चमत्कार को देखकर ही तमाम् दुनिया इस विचार की क़ायल हुई है।

दूसरा प्रमाण -

दूसरा प्रमाण जो क़ुर्आन शरीफ़ ने ख़ुदा तआला के मौजूद होने के बारे में दिया है वह इन आयतों से स्पष्ट है:-

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ
مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ
ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ
وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى
وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ
وَلُوْطًا وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ (अल-अनाम - 84 से 87)

फिर कुछ आयतों के बाद फ़रमाया:-

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ

(अल-अनाम - 91)

कि एक दलील हमने इब्राहीम को भी उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसका स्थान चाहते हैं ऊँचा करते हैं वस्तुत: तेरा रब्ब बड़ी हिकमत और ज्ञान वाला है। फिर फ़रमाया हमने उसे इस्हाक़ और याक़ूब दिए और हर एक को हमने सच्चा रास्ता दिखाया और इससे पहले हमने नूह को सच्चा रास्ता दिखाया और उसकी औलाद में से

दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को भी। हम नेक कामों में आगे बढ़ने वालों के साथ इसी तरह बर्ताव किया करते हैं और ज़करिया, यहया, ईसा और इलियास को भी राह दिखाई। ये सब लोग सदाचारी थे और इस्माईल, यस्अ और लूत को भी सच्ची राह दिखाई। इन सबको हमने अपने-अपने ज़माने के लोगों पर प्रतिष्ठा दी थी। फिर फ़रमाता है कि ये वे लोग थे जिनको ख़ुदा ने हिदायत दी थी। इसलिए तू उनके मार्ग का अनुसरण कर। इन आयतों में अल्लाह तआला ने बताया है कि इतने नेक और पवित्र लोग जिस बात की गवाही देते हैं वह बात मानी जाए या वह बात मानी जाए जो दूसरे अनभिज्ञ लोग कहते हैं और अपने चाल-चलन से उनके चाल-चलन का मुक़ाबला नहीं कर सकते। सीधी बात है कि उन्हीं लोगों की बात को महत्व दिया जाएगा जो अपने चाल-चलन और अपने कार्यों से दुनिया पर अपनी नेकी, पवित्रता, गुनाहों से बचना और झूठ से परहेज़ करना आदि साबित कर चुके हैं। इसलिए हर एक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह उन्हीं का अनुसरण करे और उनकी अपेक्षा दूसरे लोगों की बात का इन्कार कर दे। हम देखते हैं कि जितने नेकी और सद्भाव फैलाने वाले गुज़रे हैं और जिन्होंने अपने कर्मों से दुनिया पर अपनी सच्चाई का सिक्का बिठा दिया था, वे सब के सब इस बात की गवाही देते हैं कि एक ऐसी हस्ती है जिसे भिन्न-भिन्न भाषाओं में अल्लाह या गाड या परमेश्वर इत्यादि कहा गया है। हिन्दुस्तान के अवतार रामचन्द्र, कृष्ण, ईरान के अवतार ज़रथ्रुस्त, मिस्र के अवतार मूसा, नासरा के अवतार मसीह, पंजाब के अवतार नानक फिर सब अवतारों का सिरमौर अरब का नूर मुहम्मद मुस्तफ़ा जिसको उसकी क़ौम ने बचपन से ही सत्यवादी की उपाधि दी और जिसने कहा فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا (यूनुस - 17) मैंने तो तुम्हारे बीच अपनी

उम्र गुज़ारी है क्या तुम मेरा कोई झूठ साबित कर सकते हो? और इस पर उसकी क़ौम कोई आरोप नहीं लगा पायी। उनके अतिरिक्त और भी हज़ारों सत्यनिष्ठ जो दुनिया में हुए हैं एक स्वर होकर पुकारते हैं कि ख़ुदा एक है और इतना ही नहीं बल्कि यह भी कहते हैं कि हम उससे मिले और उससे बातें भी कीं। बड़े से बड़े दार्शनिक जिन्होंने दुनिया में कोई काम किया हो वे इनमें से एक के काम का हज़ारवाँ अंश भी प्रस्तुत नहीं कर सकते। यदि इन सत्यनिष्ठों और दार्शनिकों के जीवन की तुलना की जाए तो दार्शनिकों के जीवन में कथनी की अपेक्षा करनी बहुत ही कम नज़र आएगी। जो सत्यनिष्ठता उन्होंने दिखलाई वह दार्शनिक कहाँ दिखा सके? दार्शनिक लोगों को सच्चाई की शिक्षा देते तो हैं लेकिन ख़ुद झूठ बोलना नहीं छोड़ते। लेकिन इसकी तुलना में वे लोग जिनका नाम मैं ऊपर ले चुका हूँ केवल सच्चाई के लिए हज़ारों कष्टों को बर्दाश्त करते रहे और कभी उनका क़दम इससे पीछे नहीं हटा। उनके क़त्ल के षड़यन्त्र रचे गए, उनको उनके वतन से निकाला गया, उनको रास्तों और बाज़ारों में अपमानित करने की कोशिश की गयी, उनका सामाजिक बहिष्कार किया गया, मगर उन्होंने अपनी बात न छोड़ी और ऐसा भी न किया कि लोगों से झूठ बोलकर अपने आपको बचा लेते। उनके कामों ने, उनके त्याग ने, दिखावे से दूरी ने इस बात को साबित कर दिया कि वे नि:स्वार्थ थे और किसी स्वार्थपरायणता से कोई काम न करते थे। फिर ऐसे सत्यनिष्ठ और ऐसे विश्वस्त एक स्वर होकर कह रहे हैं कि हमने अल्लाह तआला से बातें कीं, उसकी आवाज़ सुनी और उसके चमत्कार देखे, तो उनकी बात का इन्कार करने का किसी के पास क्या कारण है। जिन लोगों को हम रोज़ झूठ बोलते सुनते हैं वे भी कुछ थोड़े मिलकर एक बात की गवाही देते हैं तो

मानना ही पड़ता है। जिनके हालात से हम बिल्कुल अनभिज्ञ होते हैं वे अख़बारों में अपनी खोज प्रकाशित करते हैं तो हम मान लेते हैं, लेकिन उन सत्यनिष्ठों की बात को नहीं मानते। लोग कहते हैं कि लन्दन एक शहर है और हम उसे मान लेते हैं, भूगोलशास्त्री लिखते हैं कि अमेरिका एक महाद्वीप है और हम उसको सच्चा मान लेते हैं, घुमक्कड़ कहते हैं कि साइबेरिया एक बड़ा और वीरान इलाक़ा है हम उसका इन्कार नहीं करते, क्यों? इसलिए कि बहुत से लोगों ने इस पर गवाही दी है। हालाँकि हम उन गवाहों के हालात से परिचित नहीं कि वे झूठे हैं या सच्चे। लेकिन अल्लाह तआला के वजूद पर चश्मदीद गवाही देने वाले वे लोग हैं कि जिनकी सच्चाई सूर्य की भाँति स्पष्ट है। उन्होंने अपनी जान, माल, वतन, और इज़्ज़त को क़ुर्बान करके सच्चाई को दुनिया में क़ायम किया। फिर इन सैलानियों और भूगोलशास्त्रियों की बात को मानना और उन सत्यनिष्ठों की बात को न मानना कहाँ की नेकी और सच्चाई है? अगर लन्दन का वजूद थोड़े से लोगों से सुनकर साबित हो सकता है तो अल्लाह तआला का वजूद हज़ारों सत्यनिष्ठों की गवाही से क्यों साबित नहीं हो सकता?

तात्पर्य यह कि हज़ारों सत्यनिष्ठों की गवाही जो अपनी आँखों देखी ख़ुदा के वजूद पर देते आए हैं उसका किसी भी दशा में खण्डन नहीं किया जा सकता। आश्चर्य है कि जो उस मार्ग में हैं वे तो सब एकमत होकर कह रहे हैं कि ख़ुदा है लेकिन जो रूहानियत (आध्यात्मिकता) से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं वे कहते हैं कि उन सत्यनिष्ठों की बात न मानो जो यह कहते हैं कि ख़ुदा है। हालाँकि गवाही के नियमानुसार अगर दो बराबर के सत्यनिष्ठ एक बात के बारे में गवाही दें तो जो कहता है कि मैंने अमुक चीज़ को देखा है उसकी गवाही को उस दूसरे की गवाही पर

प्रधानता दी जाएगी जो यह कहता है कि मैंने उस चीज़ को नहीं देखा। क्योंकि यह सम्भव है कि उनमें से एक की नज़र उस चीज़ पर न पड़ी हो। लेकिन यह असम्भव है कि एक ने न देखा हो और कह दे कि मैंने देखा है। अतएव ख़ुदा को देखने वालों की गवाही उसके इन्कार करने वालों पर अवश्य अकाट्य और निर्णायक तर्क होगी।

तीसरा प्रमाण -

तीसरा प्रमाण जो क़ुर्आन शरीफ़ से मालूम होता है यह है कि मनुष्य की प्रकृति स्वयं ख़ुदा तआला के मौजूद होने का एक प्रमाण है क्योंकि कुछ ऐसे गुनाह हैं जिनको मनुष्य की प्रकृति बिल्कुल पसन्द नहीं करती जैसे माँ, बहन, और बेटी के साथ व्यभिचार, मल-मूत्र और इस प्रकार की अन्य गन्दगियाँ, झूठ इत्यादि। यह सब ऐसी चीज़ें हैं कि जिनसे एक नास्तिक भी परहेज़ करता है। अगर कोई ख़ुदा नहीं तो क्यों वह माँ-बहन और दूसरी औरतों में अन्तर समझता है? झूठ को क्यों बुरा समझता है? वे कौन से कारण हैं जिन्होंने उपरोक्त चीज़ों को उसकी दृष्टि में बुरा ठहरा दिया है। अगर किसी महान शक्ति का रौब उसके दिल पर नहीं तो वह क्यों उनसे बचता है? उसके लिए तो झूठ-सच और न्याय-अन्याय सब एक होना चाहिए। जो दिल की ख़ुशी हुई कर लिया। वह कौन सा आदेश है जो उसकी भावनाओं पर शासन करता है जिसने दिल पर अपना सिंहासन बना रखा है। एक नास्तिक ज़बान से चाहे उसके शासन से निकल जाए लेकिन उसकी बनाई हुई प्रकृति से बाहर नहीं निकल सकता और गुनाहों या उनके बयान से परहेज़, यह उसके लिए एक प्रमाण है कि किसी बादशाह के सामने जवाबदेही का डर है जो उसके दिल पर छाया है हालाँकि वह उसकी बादशाहत का इन्कार करता है।

क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

لَآ اُقۡسِمُ بِیَوۡمِ الۡقِیٰمَةِ ۙ وَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالنَّفۡسِ اللَّوَّامَةِ ؕ

(अल-क़ियामत - 2,3)

कि जैसा लोग समझते हैं कि न ख़ुदा है और न ही दण्ड और प्रतिफल, ऐसा नहीं है बल्कि हम इन बातों के प्रमाण के लिए दो चीज़ें प्रस्तुत करते हैं। एक यह कि हर बात के लिए क़यामत का एक दिन मुक़र्रर है जिसमें उसका निर्णय होता है और नेकी का बदला नेक और बुराई का बदला बुरा मिलता है। अगर ख़ुदा नहीं तो दण्ड और प्रतिफल क्यों मिल रहे हैं और जो लोग सबसे बड़ी क़ियामत का इन्कार करते हैं वे देख लेंगे कि क़ियामत तो इस दुनिया से शुरू है कि व्यभिचारी को आतशक और सूज़ाक की बीमारी हो जाती है और शादीशुदा को नहीं, हालाँकि दोनों एक ही काम कर रहे होते हैं। दूसरा प्रमाण राजसिक प्रवृत्ति है अर्थात् मनुष्य का दिल स्वयं ऐसे गुनाह पर उसे झकझोरता है कि यह बात बुरी और गन्दी है। नास्तिक भी व्यभिचार और झूठ को बुरा समझेंगे और अहंकार और ईर्ष्या को अच्छा न समझेंगे, मगर क्यों? उनके पास तो कोई शरीअत(धर्मविधान) नहीं। यह इसलिए कि उनका दिल बुरा मानता है और दिल इसीलिए बुरा मानता है क्योंकि वह जानता है कि मुझे इस काम की एक सबसे बड़े हाकिम की ओर से सज़ा मिलेगी, यद्यपि वह शब्दों में उसे व्यक्त नहीं कर सकता। इसी के समर्थन में एक और जगह क़ुर्आन शरीफ़ में है:-

فَاَلۡهَمَهَا فُجُوۡرَهَا وَتَقۡوٰىهَا ۙ (अल्-शम्स - 9)

अल्लाह तआला ने हर दिल में नेकी और बदी को पहचानने की बात डाल दी है। अतः नेकी बदी का एहसास पैदा होना स्वयं ख़ुदा के मौजूद होने का एक ठोस प्रमाण है। अगर ख़ुदा नहीं तो क्या कारण है

कि एक चीज़ को नेक और एक को बुरा कहा जाए, फिर तो जो मन में आए लोग किया करें।

चौथा प्रमाण -

चौथा प्रमाण जो ख़ुदा तआला के मौजूद होने का क़ुर्आन शरीफ़ से हमें मिलता है वह यह है कि:-

وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَاَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَاَمَاتَ وَاَحْيَا ۝ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝

(अल-नजम - 43-47)

यह बात हर एक नबी के माध्यम से हमने पहुँचा दी है कि हर एक चीज़ का चरमोत्कर्ष अल्लाह तआला की हस्ती पर ही जाकर होता है। चाहे ख़ुशी की घटनाएँ हों या ग़म की, वह ख़ुदा की ओर से ही आती हैं और ज़िन्दगी और मौत सब उसी के हाथ में है और उसने एक छोटी सी चीज़ से जब वह डाली जाती है, स्त्री और पुरुष दोनों को पैदा किया है।

इन आयतों में अल्लाह तआला ने इन्सान को इस ओर ध्यान दिलाया है कि हर एक काम का एक कर्ता होता है इसलिये अवश्य है कि हर काम का करने वाला भी कोई हो। अतएव इस पूरे ब्रह्माण्ड पर यदि चिन्तन करोगे तो तुम्हारा मार्गदर्शन अवश्य इस ओर होगा कि सारी चीज़ें अन्ततः ख़ुदा तआला पर जाकर ख़त्म होती हैं और वही तमाम् चीज़ों का चरमोत्कर्ष है और उसी के इशारे से यह सब कुछ हो रहा है। अल्लाह तआला ने इन्सान को उसकी प्रारम्भिक अवस्था की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया है कि तुम्हारी उत्पत्ति तो एक उछलते हुए पानी अर्थात् वीर्य से है और तुम ज्यों-ज्यों पीछे जाते हो और न्यूनतम होते जाते हो, फिर तुम

कैसे अपने स्रष्टा बन सकते हो। जब स्रष्टा के बिना कोई सृष्टि हो ही नहीं सकती और इन्सान अपने आप का स्वयं स्रष्टा नहीं है। जब इन्सान की हालत पर ग़ौर करते हैं तो पता चलता है कि वह अत्यन्त छोटी और न्यूनतर अवस्था से उन्नति करके इस अवस्था को पहुँचता है और जब वह वर्तमान स्थिति में स्रष्टा नहीं तो उस कमज़ोर स्थिति में कैसे स्रष्टा हो सकता था। इसलिए मानना पड़ेगा कि उसका स्रष्टा कोई और है जिसकी शक्तियाँ असीमित और चमत्कार अनन्त हैं। तात्पर्य यह कि मनुष्य की क्रमागत उन्नति पर जितना ग़ौर करते जाएँगे उसके कारण उतने ही सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते जाते हैं और अन्ततः समस्त भौतिक ज्ञान एक स्थान पर जाकर ठहर जाते हैं और कह देते हैं कि अब यहाँ से आगे हमारी पहुँच नहीं और हम नहीं जानते कि यह क्यों हो गया। यह वही स्थान है जहाँ अल्लाह तआला का हाथ काम कर रहा होता है और अर्थात् अन्ततः हर एक वैज्ञानिक को मानना पड़ता है कि اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى अन्ततः हर एक चीज़ की इन्तिहा (चरमोत्कर्ष) एक ऐसी हस्ती पर होती है जिसको वे अपनी बौद्धिक परिधि में नहीं ला सकते और वही ख़ुदा है। यह एक ऐसा स्पष्ट प्रमाण है कि जिसे एक अनपढ़ से अनपढ़ व्यक्ति भी समझ सकता है।

कहते हैं कि किसी ने एक देहाती से पूछा कि तेरे पास ख़ुदा की क्या दलील है? उसने उत्तर दिया कि यदि जंगल में ऊँट की एक मेंगनी पड़ी हुई हो तो मैं उसे देखकर बता देता हूँ कि यहाँ से कोई ऊँट गुज़रा है, फिर इतनी बड़ी सृष्टि को देखकर क्या मैं समझ नहीं सकता कि इसका कोई स्रष्टा है? निःसन्देह यह एक सच्चा और प्रकृति के अनुसार जवाब है। इस सृष्टि की उत्पत्ति की ओर यदि मनुष्य चिन्तन करे तो अन्ततः उसे एक ऐसी हस्ती को मानना पड़ेगा जिसने यह सब पैदा किया।

पाँचवाँ प्रमाण -

ख़ुदा तआला के मौजूद होने का पाँचवाँ प्रमाण जो क़ुर्आन शरीफ़ ने दिया है उपरोक्तानुसार होते हुए अधिक ठोस और स्पष्ट है और यहाँ अधिक सुन्दर तर्क से काम लिया गया है। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ
الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ
مَا تَرٰي فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ
تَرٰي مِنْ فُطُوْرٍ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ
الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۙ (अल-मुल्क - 3 से 5)

अर्थात् बहुत बरकत वाला है वह, जिसके हाथ में समग्र साम्राज्य है और वह हर चीज़ पर समर्थ है। उसने मौत और ज़िन्दगी पैदा की है ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में से कौन अधिक अच्छे काम करता है और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला और बहुत क्षमा करने वाला है। उसने परत दर परत सात आसमान पैदा किए और उनमें परस्पर अनुकूलता और अनुरूपता रखी है, तू कभी अल्लाह तआला की सृष्टि में कोई विसंगति नहीं देखेगा। तू अपनी नज़र को दौड़ाकर देख, क्या तुझे कोई त्रुटि दिखाई देती है। फिर दोबारा अपनी नज़र को दौड़ा, वह थक हार कर तेरी ओर असफल होकर लौट आएगी।

कुछ लोग कहते हैं कि यह सारी सृष्टि अचानक पैदा हो गयी है और संयोग से तत्वों के मिलने से यह सब कुछ बन गया। फिर विज्ञान से यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि हो सकता है कि दुनिया ख़ुद

बख़ुद जुड़कर स्वयं चलती जाए और इसका चलाने वाला कोई न हो। लेकिन उनका जवाब अल्लाह तआला इन आयतों में देता है कि संयोग से जुड़ने वाली चीज़ों में कभी एक सिलसिला और निज़ाम नहीं होता बल्कि वे विसंगत होती हैं। विभिन्न रंगों से मिलकर एक चित्र बनता है। लेकिन अगर भिन्न-भिन्न रंग एक कागज़ पर फेंक दें तो क्या उससे चित्र बन जाएगा। ईंटों से मकान बनता है लेकिन क्या ईंटे एक-दूसरे पर फेंक देने से मकान बन जाएगा। असम्भावित रूप से यदि मान भी लिया जाय कि कुछ घटनाएँ सहसा हो जाती हैं लेकिन क़ुदरत के निज़ाम को देखकर कभी कोई इन्सान यह नहीं कह सकता कि यह सब कुछ ख़ुद ही हो गया है। माना कि ख़ुद बख़ुद ही तत्व से धरती पैदा हो गयी और यह भी मान लिया कि मनुष्य सहसा पैदा हो गया। लेकिन मनुष्य की उत्पत्ति पर तो ग़ौर करो कि क्या ऐसी श्रेष्ठ उत्पत्ति कभी ख़ुद बख़ुद हो सकती है? साधारणतः दुनिया में एक गुण की विशेषता से उसके बनाने वाले का पता चलता है। एक सुन्दर चित्र को देखकर तुरन्त यह विचार उत्पन्न होता है कि किसी महान चित्रकार ने इसे बनाया है। एक सुन्दर लेख को देखकर यह समझा जाता है कि किसी महान लेखक ने इसे लिखा है और जितना लगाव बढ़ता जाए उतना ही उसके बनाने या लिखने वाले की विशेषता और महानता दिल में बैठती जाती है फिर कैसे कहा जाता है कि ऐसा व्यवस्थित जगत् ख़ुद बख़ुद यूँ ही पैदा हो गया। थोड़ा इस बात पर तो ग़ौर करो कि जहाँ मनुष्य में उन्नति करने की शक्तियाँ मौजूद हैं वहाँ उसे अपने विचारों को व्यवहारिक रूप में प्रदर्शित करने की बुद्धि भी दी गयी है और उसका शरीर भी उसके अनुसार बनाया गया है। चूँकि उसको मेहनत करके जीविका कमानी थी इसलिए उसे शक्ति दी कि चल फिरकर अपनी जीविका पैदा कर ले। वृक्ष का भोजन अगर

ज़मीन में रखा है तो उसे जड़ें दी कि वह उसके अन्दर से अपना पेट भर ले। अगर शेर की ख़ुराक माँस रखी तो उसे शिकार करने के लिए नाख़ून दिए। अगर घोड़े और बैल के लिए घास निर्धारित की तो उनको ऐसी गर्दन दी कि झुक कर घास पकड़ सकें। अगर ऊँट के लिए पेड़ों की पत्तियाँ और काँटे निर्धारित किए तो उसकी गर्दन भी ऊँची बनायी। क्या यह सब कारख़ाना संयोग से हो गया? क्या संयोग ने यह बात मालूम कर ली थी कि ऊँट को गर्दन लम्बी दूँ और शेर को पंजे और वृक्ष को जड़ें और मनुष्य को टाँगें। क्या यह समझ में आ सकता है कि जो काम ख़ुद बख़ुद हो गया उसमें इतनी व्यवस्था रखी गयी हो? फिर अगर मनुष्य के लिए फेफड़ा बनाया तो उसके लिए हवा भी पैदा की, अगर पानी पर उसकी ज़िन्दगी रखी तो सूरज के द्वारा बादलों के माध्यम से उसे पानी पहुँचाया और अगर आँखें दीं तो उनको उपयोगी बनाने के लिए सूरज की रोशनी भी दी ताकि वह उसमें देख भी सके। कान दिए तो इसके साथ-साथ अच्छी आवाज़ें भी पैदा कीं, जीभ के साथ-साथ स्वादिष्ट चीज़ें भी पैदा कीं, नाक बनायी तो ख़ुशबू भी पैदा की। सम्भव था कि संयोग मनुष्य में फेफड़ा पैदा कर देता लेकिन उसके लिए यह हवा का सामान क्यों पैदा हो गया? सम्भव था कि मनुष्य की आँखें पैदा हो जातीं लेकिन वह अजीब संयोग था जिसने करोड़ों मील पर जाकर एक सूरज भी पैदा कर दिया ताकि वे अपना काम कर सकें। अगर एक ओर संयोग से कान पैदा हो गए थे तो यह कौन सी हस्ती थी जिसने दूसरी ओर आवाज़ भी पैदा कर दी। मान लिया कि हिमवर्ती देशों में कुत्ते या रीछ संयोग से पैदा हो गए लेकिन क्या कारण है कि उन कुत्तों और रीछों के बाल इतने लम्बे बन गए कि वे सर्दी से बच सकें। संयोग ही ने हज़ारों बीमारियाँ पैदा कीं संयोग ही ने उनका इलाज बना दिया। संयोग ने ही वह बूटी

पैदा की जिसके छूने से खुजली पैदा हो जाती है और उसने उसके साथ पालक का पौधा लगा दिया कि उसका इलाज हो जाए। नास्तिकों का संयोग भी अजीब है कि जिन चीज़ों के लिए मृत्यु का निर्णय किया उनके साथ संतानोत्पत्ति का सिलसिला भी क़ायम कर दिया और जिन चीज़ों के साथ मौत न थी वहाँ संतानोत्पत्ति का यह सिलसिला ही नहीं रखा। मनुष्य अगर पैदा होता और मरता नहीं तो कुछ सालों में ही दुनिया का ख़ात्मा हो जाता, इसलिए उसके साथ मौत लगा दी। लेकिन सूरज, चाँद और धरती न नए पैदा होते हैं न अगले मरते हैं। क्या यह प्रबन्ध कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं कि धरती और सूरज में चुम्बकत्व है इसलिए उनको एक-दूसरे से इतनी दूर रखा कि आपस में टकरा न जाएँ। क्या यह बातें इस बात पर संकेत नहीं करती हैं कि इन सब चीज़ों का स्रष्टा वह है जो न केवल सर्वज्ञ है बल्कि असीमित और अनन्तज्ञानी है। उसके नियम परस्पर ऐसे आबद्ध हैं कि उनमें कुछ मतभेद नहीं और न कुछ कमी है। मुझे तो अपनी ऊँगलियाँ भी उसकी हस्ती का एक सबूत मालूम होती हैं। मुझे जहाँ ज्ञान दिया था वहाँ अगर शेर का पंजा मिल जाता तो क्या मैं उससे लिख सकता? शेर को ज्ञान नहीं दिया बल्कि उसे पंजे दिए, मुझे ज्ञान दिया और लिखने के लिए ऊँगलियाँ भी दीं।

सरकारों में हज़ारों बुद्धिमान उनकी दुरुस्ती के लिए रात-दिन लगे रहते हैं लेकिन फिर भी देखते हैं कि उनसे ऐसी-ऐसी ग़लतियाँ हो जाती हैं कि जिनसे सरकारों को ख़तरनाक नुकसान पहुँच जाता है बल्कि कभी-कभी बिल्कुल तबाह हो जाती हैं। लेकिन अगर इस दुनिया का कारोबार सिर्फ संयोग पर है तो आश्चर्य है कि हज़ारों बुद्धिमान लोग तो ग़लती करते हैं लेकिन यह संयोग तो ग़लती नहीं करता। लेकिन सच्ची बात यही है कि इस सृष्टि का एक स्रष्टा है जो बड़े व्यापक संसार का मालिक

और उस पर प्रभुत्व रखने वाला है और अगर न होता तो यह इन्तिज़ाम नज़र न आता। अब जिस तरफ नज़र दौड़ाकर देखो तुम्हारी नज़र क़ुर्आन शरीफ़ के कथनानुसार थक हारकर वापिस लौट आएगी और हर एक चीज़ में एक इन्तिज़ाम होगा। नेक इनाम और दुष्ट सज़ा पा रहे हैं। हर एक चीज़ अपना उत्तरदायित्व निभा रही है और एक पल के लिए भी सुस्त नहीं। यह एक बहुत व्यापक विषय है लेकिन मैं उसे यहीं ख़त्म करता हूँ। अक़्लमन्द को इशारा काफ़ी है।

छठा प्रमाण -

क़ुर्आन शरीफ़ से मालूम होता है कि अल्लाह तआला के अस्तित्व का इन्कार करने वाले हमेशा रुसवा और शर्मिन्दा होते हैं और उनके झूठे होने का यह भी एक सुबूत है। क्योंकि अल्लाह अपने मानने वालों को हमेशा विजय देता है और वे अपने विरोधियों पर प्रभुत्व पाते हैं। अगर कोई ख़ुदा नहीं तो यह समर्थन और सहायता कहाँ से आती है? अल्लाह तआला फ़रमाता है कि फ़िरऔन ने मूसा से कहा है कि

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰی ۝ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰی ۝

(अन्-नाज़ियात - 25,26)

अर्थात् जब हज़रत मूसा ने उसे ख़ुदा तआला की आज्ञापालन के लिए कहा तो उसने अहंकार में डूबकर जवाब दिया कि कैसा ख़ुदा? ख़ुदा तो मैं हूँ। फिर अल्लाह तआला ने उसे इस दुनिया में भी और परलोक में भी रुसवा किया। अत: फिरऔन की घटना एक स्पष्ट प्रमाण है कि किस तरह ख़ुदा को न मानने वाले शर्मिन्दा और रुसवा होते हैं। इसके अतिरिक्त नास्तिकों ने दुनिया में कभी कोई साम्राज्य स्थापित नहीं किया, बल्कि संसार को विजय करने वाले और लोगों के सुधारक और

इतिहास को बनाने वाले वही लोग हैं जो ख़ुदा के क़ायल हैं। क्या यह इनकी रुसवाई और दुर्भाग्य और क़ौम के रूप में कभी दुनिया के सामने न उभरना कुछ अर्थ नहीं रखता?

सातवाँ प्रमाण -

अल्लाह तआला के विद्यमान होने का यह है कि उसको मानने वाले और उस पर पूर्ण विश्वास रखने वाले हमेशा सफल होते हैं और लोगों की मुख़ालिफ़त के बावजूद उन पर कोई ऐसी मुसीबत नहीं आती जो उन्हें असफ़ल कर दे। ख़ुदा तआला की हस्ती के मनवाने वाले हर देश में पैदा हुए हैं और जितनी उनकी मुख़ालिफ़त हुई है उतनी किसी और की नहीं। लेकिन फिर दुनिया उनके ख़िलाफ़ क्या कर सकी? क्या श्रीरामचन्द्र को वनवास भेजने वालों ने सुख पाया? और रावण ने कौन सा आराम पा लिया? क्या श्रीरामचन्द्र जी का नाम हज़ारों साल के लिए ज़िन्दा नहीं हो गया और क्या रावण का नाम हमेशा के लिए बदनाम नहीं हुआ? और श्रीकृष्ण की बात को ठुकराकर कौरवों ने क्या लाभ पाया? क्या वे कुरूक्षेत्र के मैदान में तबाह नहीं हुए? बादशाह फ़िरऔन जो इस्राईल क़ौम से ईंटें पथवाता था, उसने मूसा अलैहिस्सलाम जैसे असहाय व्यक्ति की मुख़ालिफ़त की, मगर क्या मूसा अलैहिस्सलाम का कुछ बिगाड़ सका? बल्कि वह स्वयं डूब गया और मूसा नबी बादशाह बन गए। हज़रत ईसा नबी की दुनिया ने जो कुछ मुख़ालिफ़त की वह भी स्पष्ट है और उनकी तरक़्क़ी भी, जो कुछ हुई वह किसी से छुपी नहीं। उनके दुश्मन तो तबाह हुए और उनके सेवक देशों के बादशाह बन गए। हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी दुनिया में सबसे अधिक अल्लाह तआला के नाम को फैलाने वाले थे,

यहाँ तक कि यूरोप का एक लेखक कहता है कि उनको ख़ुदा का जुनून था (नऊज़ु बिल्लाह), वह हर समय ख़ुदा-ख़ुदा ही कहते रहते थे। उनकी सात क़ौमों ने मुख़ालिफ़त की, अपने-पराए सब उनके दुश्मन हो गए, मगर क्या फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया के देशों पर विजय नहीं पायी? अगर ख़ुदा नहीं तो यह सहायता किसने की? अगर यह सब कुछ संयोग था तो कोई पैदा तो ऐसा होता जो ख़ुदा की ख़ुदाई साबित करने आता और दुनिया उसे रुसवा कर देती!!! लेकिन जो कोई ख़ुदा के नाम को फैलाने वाला उठा वह प्रतिष्ठित और सम्मानित ही हुआ। अल्लाह तआला क़ुर्आन शरीफ़ में फ़रमाता है कि:-

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ

(अलमाइदः - 57)

जो कोई अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों से सच्ची दोस्ती रखता है तो समझ लेना चाहिए कि यही वे लोग हैं जो ख़ुदा को मानने वाले हैं और यही हैं वे जो अन्त में विजयी होते हैं।

आठवाँ प्रमाण -

अल्लाह तआला की हस्ती के मौजूद होने का आठवाँ प्रमाण क़ुर्आन शरीफ़ ने यह दिया है कि वह दुआओं को क़बूल करता है। अतः जब कोई गिड़गिड़ाकर उसके सामने दुआ करता है तो वह उसे क़बूल करता है और यह बात किसी विशेष युग से सम्बन्धित नहीं, बल्कि हर युग में इसके उदाहरण मिलते हैं। क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि:-

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ۝

(अल-बक़र: - 187)

अर्थात् जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुझसे पूछें तो उनसे कह दे कि मैं उनके बहुत क़रीब मौजूद हूँ और जब फ़रियाद करने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ सुनता हूँ। लेकिन शर्त यह है कि वे भी मेरी बात मानें और मुझ पर विश्वास करें ताकि वे सन्मार्ग पाएँ। अब अगर कोई कहे कि कैसे मालूम हो कि ख़ुदा दुआ सुनता है और क्यों न यह कहा जाए कि कुछ दुआ करने वालों के काम संयोग से हो जाते हैं और कुछ के नहीं भी होते। अगर सारी दुआएँ क़बूल हो जाएँ तब भी कुछ बात थी, लेकिन कुछ की क़बूल होने से यह कैसे मालूम हो कि यह संयोग न था बल्कि किसी हस्ती ने क़बूल किया है तो इसका उत्तर यह है कि दुआ की क़बूलियत अपने साथ निशान रखती है। अतः हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की ओर से दुआ क़बूल करने के प्रमाण में यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया था कि कुछ ऐसे बीमार चुन लिए जाएँ जो अत्यन्त ख़तरनाक बीमारियों में ग्रस्त हों और उन्हें दो गिरोहों में बाँट लिया जाए और एक गिरोह का डाक्टर इलाज करें और दूसरी तरफ़ मैं अपने हिस्से में आने वाले गिरोह के लोगों के लिए दुआ करूँ। फिर देखो कि किसके गिरोह वाले बीमार अच्छे होते हैं। अब इस प्रकार की आज़माइश में क्या शक हो सकता है?अतः पागल कुत्ते का काटा हुआ एक व्यक्ति जो पागल हो चुका था और जिसका इलाज करने से कसौली के डाक्टरों ने बिल्कुल इन्कार कर दिया था और यह लिखकर दे दिया था कि इसका कोई इलाज नहीं। उसके लिए हज़रत मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने दुआ की और वह अच्छा हो गया। हालाँकि पागल कुत्ते के काटे हुए पागल होने के बाद कभी अच्छे नहीं होते। इसलिए दुआओं की क़बूलियत इस बात का प्रमाण है कि कोई ऐसी हस्ती मौजूद है जो दुआओं को क़बूल करती है। दुआओं

की क़बूलियत किसी विशेष युग से सम्बद्ध नहीं, बल्कि हर युग में इसके निशान देखे जा सकते हैं। अत: जैसे पहले युग में दुआएँ क़बूल होती थीं वैसे अब भी क़बूल होती हैं।

नवाँ प्रमाण -

क़ुर्आन शरीफ़ से ख़ुदा तआला के मौजूद होने का नवाँ प्रमाण "इल्हाम" ज्ञात होता है। यद्यपि इस प्रमाण को मैंने नवें नम्बर पर रखा है लेकिन वस्तुत: यह एक बहुत बड़ा प्रमाण है जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व को नि:सन्देह रूप से साबित कर देता है। अत: क़ुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि:

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۝ (इब्राहीम - 28)

अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को इस लोक और परलोक में साबितशुदा और प्रमाणित बातें सुना-सुनाकर दृढ़ता प्रदान करता रहता है। अत: जब हर ज़माने में अल्लाह तआला बहुत से लोगों से बातें करता है तो फिर उसका इन्कार कैसे सत्य हो सकता है? वह केवल नबियों, रसूलों से ही बातें नहीं करता बल्कि अपने साधारण भक्तों से भी बातें करता है और कभी-कभी अपने किसी छोटे से भक्त पर भी दया करके उसे शांत्वना देता है। अत: इस विनीत से भी उसने बातें करके अपने अस्तित्व को प्रमाणित कर दिया। इतना ही नहीं कभी-कभी दुष्ट और कपटी लोगों से भी प्रमाणसिद्ध हेतु बोल लेता है। अत: कभी-कभी नीच से नीच लोगों और वैश्याओं तक को भी सच्चे स्वप्न और इल्हाम हो जाते हैं और उन स्वप्नों और इल्हामों का किसी महान हस्ती की ओर से होने का प्रमाण यह होता है कि कभी-कभी उन इल्हामों में भविष्य की बातें

होती हैं जो अपने समय पर पूरी होकर सिद्ध कर देती हैं कि यह इन्सानी दिमाग़ का काम न था और न किसी मानसिक रोग का परिणाम था और कभी-कभी सैकड़ों वर्ष भविष्य की बातें बतायी जाती हैं ताकि कोई यह न कह दे कि वर्तमान की घटनाएँ स्वप्न में आ गयीं और वह संयोग से पूरी हो गयीं। तौरैत और क़ुर्आन शरीफ़ में ईसाइयों की इन तरक़्क़ियों का विस्तारपूर्वक स्पष्ट शब्दों में पहले से वर्णन मौजूद था जिनको देखकर अब दुनिया हैरान है, बल्कि उन घटनाओं का भी वर्णन है जो भविष्य में घटित होने वाली हैं जैसे कि:-

(क) وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝

(तक्वीर आयत - 5)

एक समय आएगा कि ऊँटनियाँ बेकार हो जाएँगी।

हदीस मुस्लिम में इसकी व्याख्या इस तरह है कि:-

وَلَيُتْرَكَنَّ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعٰى عَلَيْهَا

ऊँटनियों से काम न लिया जाएगा।

अतएव इस ज़माने में रेल के आविष्कार से यह भविष्यवाणी पूरी हो गयी। रेल के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों में ऐसे-ऐसे संकेत पाए जाते हैं कि जिनसे पूरी तरह रेल का नक्शा आँखों के सामने आ जाता है और पूर्ण विश्वास हो जाता है कि हदीसों में भी सवारी ही तात्पर्य है जो भाप से चलेगी और अपने आगे धुएँ का एक पहाड़ रखेगी और सवारी और भार ढोने की दृष्टि से गधे के समान होगी और चलते समय एक आवाज़ करेगी। इत्यादि इत्यादि

(ख) إِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝

(तक्वीर - 11)

अर्थात् किताबों और धर्मग्रन्थों का प्रचुर मात्रा में प्रकाशन।

आजकल प्रेसों के द्वारा जितनी बहुतात से इस ज़माने में किताबों का प्रकाशन हुआ है उसके वर्णन की आवश्यकता नहीं।

(ग) اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝

(तक्वीर - 8)

लोगों के पारस्परिक सम्बन्धों का बढ़ना और मुलाक़ातों का आसान हो जाना। जो इस ज़माने में बड़े व्यापक स्तर पर स्पष्ट हो चुका है।

(घ) تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝

(नाज़ियात - 6,7)

लगातार ऐसे भयानक भूकम्पों का आना कि जिनसे धरती काँप जाएगी। यह ज़माना इसके लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है।

(ङ) وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا ۝

(बनी इस्राईल - 59)

कोई ऐसी बस्ती नहीं जिसे हम क़यामत से पहले-पहले हलाक नहीं करेंगे या किसी हद तक उसे सज़ा न करेंगे।

अतः इस ज़माने में प्लेग, भूकम्पों, तूफ़ानों और ज्वालामुखी की आग और लावों और पारस्परिक युद्धों से लोग मर रहे हैं और मौत के इतने सामान इस ज़माने में इकट्ठे हो गए हैं और इतनी जल्दी ज़ाहिर हुए हैं कि इस सम्पूर्ण स्थिति का उदाहरण पूर्व के किसी युग में नहीं पाया जाता।

इस्लाम एक ऐसा धर्म है कि हर शताब्दी में उसके अनुयायियों में से ऐसे लोग पैदा होते रहते हैं जो ख़ुदा से संवाद का सौभाग्य पाते हैं और दैवीय चमत्कारों से स्पष्ट करते हैं कि एक सर्वशक्तिमान हस्ती मौजूद है। अतः अत्यन्त बेबसी और गुमनामी की हालत में इस ज़माने के

अवतार (मसीह मौऊद व महदी माहूद) से ख़ुदा ने वह्यी नाज़िल की कि

يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ يَنْصُرُكَ رِجَالٌ نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَلَا تُصَعِّرْ لِخَلْقِ اللّٰهِ وَلَا تَسْئَمْ مِنَ النَّاسِ

(बराहीन अहमदिया मुद्रित 1881 पृ. 241,
रूहानी ख़ज़ाएन जिल्द-1 पृ.267 हाशिया)

हर एक राह से लोग तेरे पास आएँगे और इतनी अधिकता से आएँगे कि रास्ते तंग हो जाएँगे और तेरी मदद वे लोग करेंगे जिनके दिलों में हम स्वयं डालेंगे, तू ख़ुदा के बन्दों से जो तेरे पास आयें दुर्व्यवहार न करना और चाहिए कि तू उनकी मुलाक़ातों से थके न।

गाँव में रहने वाला एक गुमनाम आदमी जिसे कोई जानता तक न था, उपरोक्त घोषणा करता है। फिर घोर विरोध और रुकावटों के बावजूद एक दुनिया देखती है कि अमरीका और अफ़्रीका से लेकर सारी दुनिया के लोग यहाँ आते हैं और लोगों की अधिकता का यह आलम है कि उन सबसे मिलना और मुलाक़ात करना साधारण आदमी का काम नहीं। बड़े-बड़े लोग अपने वतन को छोड़कर यहाँ रहना पसन्द करते हैं और क़ादियान का नाम पूरी दुनिया में मशहूर हो जाता है। क्या यह छोटी सी बात है और यह ऐसा निशान है जिसे साधारण समझकर टाल दिया जाए?

द्वितीय - ईसाइयों में से डोई ने अमेरिका में नबी (अवतार) होने का दावा किया और यह प्रकाशित किया कि:-

> "मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन जल्द आए कि इस्लाम दुनिया से मिट जाए, हे ख़ुदा! तू ऐसा ही कर, हे ख़ुदा! इस्लाम को तबाह कर"

तो केवल यह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम ही थे जिन्होंने उसके मुक़ाबले में इश्तिहार

दिया और कहा कि हे वह व्यक्ति जो नबूवत का दावा करता है और मेरे साथ मुबाहला कर, हमारा मुक़ाबला दुआ से होगा और हम दोनों ख़ुदा से दुआ करेंगे कि हम में से जो झूठा है वह पहले मरे।

(टेलीग्राफ़ 5 जुलाई सन 1903 ई.)

लेकिन उसने अहंकार में आकर कहा कि, क्या तुम सोचते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खियों का जवाब दूँगा। अगर मैं अपना पाँव इन पर रखूँ तो इनको कुचलकर मार डालूँ।

(डोई का पर्चा दिसम्बर सन् 1903 ई.)

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसी इश्तिहार 23 अगस्त सन् 1903 ई. में प्रकाशित किया था कि अगर डोई मुक़ाबले से भागा तब भी नि:संदेह जान लो कि उसके शहर सैहून पर शीघ्र मुसीबत आने वाली है। हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! यह फ़ैसला शीघ्र कर और डोई का झूठ लोगों पर स्पष्ट कर दे।

प्रिय पाठको! सुनो कि इसके बाद क्या हुआ, वह जो राजकुमारों की तरह रहता था और सात करोड़ नकद सम्पत्ति का मालिक था। उसकी बीवी और बेटा दुश्मन हो गए और उसके बाप ने इश्तिहार दिया कि वह उसकी अवैध सन्तान है। अन्ततः उस पर लकवा गिरा, फिर ग़मों के मारे पागल हो गया और मार्च 1907 ई. में बड़ी हसरत और दु:ख के साथ जिसके बारे में ख़ुदा ने अपने मामूर(मसीह मौऊद व महदी माहूद) को पहले से सूचना दे दी थी जिसे उसने 20 फरवरी 1907 ई. के इश्तिहार में पहले से प्रकाशित कर दिया था कि ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है कि "मैं एक ताज़ा निशान दिखाऊँगा जिसमें बहुत बड़ी विजय होगी और वह पूरी दुनिया के लिए एक निशान होगा" वह मर कर ख़ुदा की हस्ती पर गवाही दे गया। यह ईसाई जगत पुरानी दुनिया और नई दुनिया दोनों पर

मसीह मौऊद व महदी माहूद की विजय थी।

तृतीय - इस देश में आर्यों का बोलबाला है जिनका लेखराम नामक एक लीडर था जिसके बारे में किताब करामातुस्सादिक़ीन मुद्रित सफ़र महीने 1311 हिज्ररी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह भविष्यवाणी लिखी कि लेखराम के बारे में ख़ुदा ने मेरी दुआ क़बूल करके मुझे सूचना दी है कि वह छः वर्ष के अन्दर मर जाएगा और उसका जुर्म यह है कि वह ख़ुदा के नबी (अवतार) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियाँ देता है और अपशब्दों के साथ अपमान करता है। फिर 22 फरवरी सन् 1893 ई. के इश्तिहार में उसके मरने की दशा भी बता दी कि

عِجْلٌ جَسَدٌ لَّهٗ خُوَارٌ لَّهٗ نَصَبٌ وَ عَذَابٌ

लेखराम सामिरी के बछड़ा समान है जो बेजान है और उसमें केवल एक आवाज़ है जो रूहानियत से ख़ाली है इसलिए उसको दण्ड दिया जाएगा, जिस तरह कि सामिरी के बछड़े को दिया गया था। हर एक व्यक्ति जानता है कि सामिरी के बछड़े को टुकड़े-टुकड़े किया गया था और फिर जलाकर दरिया में ड़ाला गया था।

इसके अतिरिक्त 02 अप्रैल सन् 1893 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक कश्फ़ (स्वप्न) देखा (बरकातुद्दुआ का हाशिया- रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-6 पृ.33) कि एक भारी भरकम शरीर और भयानक चेहरे वाला जो मानो मनुष्य नहीं अत्यन्त कठोर और निर्दयी फ़रिश्तों में से है और वह पूछता है कि लेखराम कहाँ है फिर करामातुस्सादिक़ीन के इस शैर में मौत का दिन भी बता दिया।

وَبَشَّرَنِيْ رَبِّيْ وَقَالَ مُبَشِّراً سَتَعْرِفُ يَوْمَ الْعِيْدِ وَالْعِيْدُ اَقْرَبُ

अर्थात् ईद के दूसरे दिन जो शनिवार का दिन होगा और निम्नलिखित

इबारत :-

الا اے دشمن نادان و بے راہ　　بترس از تیغِ برّانِ محمدؐ

पाँच साल पहले प्रकाशित करके क़त्ल की दशा भी बता दी। अन्ततः 6 मार्च सन् 1897 ई. को लेखराम का क़त्ल हो गया और सब ने पूर्ण सहमति से मान लिया कि यह भविष्यवाणी पूरी स्पष्टता के साथ पूरी होकर अल्लाह तआला के मौजूद होने पर एक जीती-जागती प्रमाण ठहरी। इसलिए ख़ुदा से वार्तालाप एक ऐसी चीज़ है कि उसके होते हुए ख़ुदा की हस्ती का इन्कार करना बड़ी बेशर्मी और नीचता होगी।

दसवाँ प्रमाण -

दसवाँ प्रमाण जो हर एक झगड़े के निर्णय के लिए क़ुर्आन शरीफ़ ने फ़रमाया है इस आयत से निकलता है कि:-

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अन्कबूत - 70)

जो लोग हमारे बारे में कोशिश करते हैं हम उनको अपनी राह दिखा देते हैं। अतएव इस आयत पर जिन्होंने अमल किया वे हमेशा फ़ायदे में रहे हैं। वह व्यक्ति जो ख़ुदा तआला का इन्कारी हो तो उसे अवश्य समझ लेना चाहिए कि अगर ख़ुदा है तो उसके लिए बहुत मुश्किल होगी। इसलिए अगर सच्चाई ज्ञात करने की उसके दिल में तड़प हो तो उसे चाहिए के पूरी तरह गिड़गिड़ाकर इस रंग में दुआ करे कि हे ख़ुदा! अगर तू है और जिस तरह तेरे मानने वाले कहते हैं कि तू अपार शक्तियों वाला है तो मुझ पर रहम कर और मुझे अपनी ओर मार्गदर्शन कर और मेरे दिल में भी भरोसा और पूर्ण विश्वास डाल दे ताकि मैं तुझ से दूर न हो जाऊँ। अगर कोई व्यक्ति इस तरह सच्चे दिल से दुआ करेगा और कम से कम चालीस दिन तक इस पर अमल करेगा तो वह चाहे जिस मज़हब

में पैदा हुआ हो और चाहे जिस देश का निवासी हो ख़ुदा उसको अवश्य सन्मार्ग दिखा देगा और वह शीघ्र देख लेगा कि अल्लाह तआला उस पर ऐसे रंग में अपना अस्तित्व साबित कर देगा कि उसके दिल से सन्देह की बीमारी बिल्कुल दूर हो जाएगी। यह स्पष्ट है कि फ़ैसले के इस तरीक़े में किसी प्रकार का कोई धोखा नहीं हो सकता। अतः सत्याभिलाषियों के लिए इसको अपनाना क्या मुश्किल है?

इस समय इन दस प्रमाणों पर ही मैं अपना लेख समाप्त करता हूँ। यद्यपि क़ुर्आन शरीफ़ में और प्रमाण भी हैं लेकिन मैं अभी इन्हीं पर ख़त्म करता हूँ। यदि कोई इस पर चिन्तन करेगा तो इन्हीं प्रमाणों में से उसके लिए और भी प्रमाण निकल आएँगे।

अन्त में उन पाठकों से जिनके हाथ में यह पुस्तिका पहुँचे निवेदन करता हूँ कि इसे पढ़ने के बाद किसी और ऐसे मित्र को दे दें जिसके लिए इसे लाभदायक समझें।

(तश्हीज़ुल अज़्हान मार्च 1913 ई.)